Department of Political Science
MA Political Science, Sem-I, Internal Assessment, February 2022

PS-C 102: Theories of International Relations

PS-C 102: अंतर्राष्ट्रीय संबंध के सिद्धांत

Date: 02.02.2022

Time: 1 hr. समय: 1 घंटे

Maximum Marks: 30 पूर्णांक: 30

Important Instructions:

1. *Attempt **any one** question; all questions carry equal marks.*
2. *The question paper is for 1 hour. 40 minutes extra is provided for scanning and attaching files.*
3. *Answers must be handwritten, scanned and sent in PDF form only via email to tir2022ia@gmail.com*
4. *Answers may be written either in English or in Hindi; but the same medium should be used throughout the paper.*
5. *Write your name, college name, admission form number, etc. on the first page. Write page number on all pages.*

महत्वपूर्ण निर्देश:

1. ***किसी एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए; सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*
2. *यह प्रश्न-पत्र 1 घंटे का है। 40 मिनट का अतिरिक्त समय उत्तर को स्कैन करने और उस फाइल को संलग्न करने के लिए दिया जा रहा है।*
3. *उत्तर हस्तलिखित होना चाहिए। इसे स्कैन कर एक पीडीएफ के रूप में ई-मेल के माध्यम से केवल यहाँ भेजना है: tir2022ia@gmail.com*
4. *इस प्रश्न-पत्र का उत्तर अंग्रेजी अथवा हिंदी, किसी एक भाषा में दीजिए; परंतु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।*
5. *अपने उत्तर के प्रथम पृष्ठ पर अपना नाम, महाविद्यालय का नाम, प्रवेश पत्रांक इत्यादि लिखें। प्रत्येक पृष्ठ पर पृष्ठ संख्या लिखें।*

---

1. Neo-liberal institutionalism offers a uni-focally optimistic notion of anarchy, whereas the English school offers a pluralistic conception of anarchy. Explain this phenomenon by elaborating upon the conceptual distinction between 'the international system', 'the international society' and 'the world society', as argued by the English School.

नव-उदारवादी संस्थावाद अराजकता की एक-केन्द्रिक रूप से आशावादी अवधारणा प्रदान करता है, जबकि इंग्लिश स्कूल अराजकता की बहुलवादी अवधारणा प्रदान करता है। इंग्लिश स्कूल द्वारा प्रतिपादित 'अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था', 'अंतर्राष्ट्रीय समाज' और 'विश्व समाज' के बीच संकल्पनात्मक अंतर का विस्तार करते हुए इस परिघटना की व्याख्या कीजिए।

2. The classic, singular narration of the birth of international relations discipline arising out of the ashes of the first world war and consequent domination of the realist tradition in IR has since been challenged by revisionist accounts of its 'multiple births'. Do you agree? Give reasons for your answer with suitable examples.

प्रथम विश्व युद्ध की राख से उत्पन्न अंतर्राष्ट्रीय संबंध विद्याशाखा की चिरसम्मत, एकल वर्णन और उसके फलस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय संबंध में यथार्थवादी परंपरा के प्रभुत्व को उस समय से ही इसके 'एकाधिक जन्म' के संशोधनवादी वृत्तांतों द्वारा चुनौती दी जाती रही है। क्या आप सहमत हैं? अपने उत्तर के लिए उपयुक्त उदाहरणों सहित कारण दीजिए।

3. Evaluate the optimism of neoliberalism on the possibility of international cooperation. Does it pose a valid challenge to the pessimism of realists?

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की संभाव्यता पर नवउदारवाद के आशावाद का मूल्यांकन कीजिए। क्या यह यथार्थवादियों के निराशावाद के समक्ष एक उचित चुनौती प्रस्तुत करता है?